रेशम कीट के प्रमुख रोग एंव उनका प्रबन्धन

ग्रेसरी रोग

शहतूत रेशम कीट में यह बीमारी विषाणु के माध्यम से होती है। यह रोग उच्च ताप क्रम अधिक आद्रता एवं अच्छी गुणवत्ता वाली पत्ती न मिलने के कारण होती है। यह एक रेशम कीट से दूसरे कीट के सम्पर्क आने से तेजी से फैलता है। इस रोग का प्रकोप वर्षा काल में अधिक होता है।

लक्षण

रोग से ग्रसित कीड़े (डिम्भक) में प्रारम्भिक अवस्था में इस बीमारी का पता लगाना कठिन होता है। इस बीमारी का पता सूक्ष्मदर्शी जांच करके लगाया जा सकत है। बीमारी से ग्रसित कीड़े के शरीर में बहुत सारे वाइरस पाये जाते हैं। जैसे–जैसे इसका वाइरस कीड़े के अन्दर बढ़ता जाता है। कीड़े की भूख कम होती जाती है। त्वचा चमकने लगती है। प्रायः संक्रमण के 5–7 दिन बाद कीड़े का शरीर फूल जाता है तथा त्वचा चमकदार व भुर भुरी हो जाती है। शरीर आसानी से फट जाता है। इससे दुधिया तरल पदार्थ निकलता है।

ग्रेसरी से ग्रसित रेशम कीट

रोग का संक्रमण

बीमारी से ग्रसित रेशम कीट की त्वचा फटने के साथ ही रोगाणु बाहर आ जाते हैं। शरीर से निकला द्रव्य कीट पालन कक्ष, शहतूत की पत्तियो तथा कीट पालन ट्रे /डाला को रोगाणु से संक्रमित कर देता है। स्वस्थ कीट द्वारा दूषित पत्ती खाने से बीमारी फैलाता है। संक्रमण का मुख्य श्रोत रोग ग्रसित कीड़े का शरीर फटने से निकलता है।

रोग के नियत्रण तथा बचाव के उपाय

- कीट पालन का कार्य स्वच्छ तथा विसंक्रमित कक्ष में करना चाहिए।
- कीट पालन कक्ष के चारों तरफ का स्थान को साफ रखना चाहिए।
- अण्डो का उचित विसंक्रमण करना चाहिए।
- रेशम कीट पालन के दौरान कीट के आयु के अनुसार पत्ती खिलाना चाहिए। कीड़ों को पत्ती समय के अनुसार खिलाना चाहिए।
- कीट पालन कक्ष हवादार होना चाहिए। तथा आमने सामने खिड़की होना चाहिए।
- कीड़ो को ट्रे / डाला में घना नहीं रखना चाहिए।
- रोगयुक्त, कमजोर, क्षतिग्रस्त, असाधारण कीड़ो को ट्रे से अलग कर नष्ट कर देना चाहिए।
- लेवेक्स का नियमित उपयोग करना चाहिए।
- कीट पालन कक्ष का ताप क्रम तथा आद्रता कीड़ो की अवस्था अनुसार बनाये रखना चाहिए।
- चौथे तथा पाँचवे अवस्था में वातायन का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

फ्लेचरी

डिम्भक में यह बिमारी जीवाणु या विषाणु के एक या दोनों माध्यम से हो सकता है। इस बिमारी कई नामों से भी पुकारा जाता है।

लक्षण

- डिम्भक सुस्त हो जाते हैं पत्ती खाना कम कर देते है तथा कीड़े की भूख मर जाती है।
- कीड़े का शरीर सिकुड़ कर ढीला व नरम हो जाता है तथा कीड़े की बढ़ोत्तरी रुक जाती है।
- कीड़े का मल पतला हो जाता है।
- रोग ग्रस्त कीड़े का रंग बदल जाता है तथा उसके शरीर से बदबू आने लगती है।
- कीड़े की चमक समाप्त हो जाती है तथा उल्टी करने लगता है।
- कीड़ा पकडने की क्षमता खो देता है।
- गरमी में इस रोग का अधिक प्रकोप होता है।

रोग का संक्रमण

डिम्भक द्वारा दूषित पत्तियाँ खाने से तथा स्वस्थ डिम्भक का रोग ग्रसित डिम्भक के सम्पर्क में आने से बीमारी से ग्रसित हो जाता है।

फ्लेचरी से ग्रसित रेशम कीट

संक्रमण का माध्यम

मरे हुए तथा रोग ग्रसित कीड़े संक्रमण के मुख्य माध्यम है। इसके अलावा कीड़े के मल, गट के रस से, कीड़े के शरीर से निकले हुए द्रव, दूषित कीट पालन कक्ष तथा दूषित शहतूत की पत्तियाँ मुख्य संक्रमण के माध्यम है।

रोग के नियत्रण तथा बचाव के उपाय

- कीट पालन कक्ष के अन्दर तथा बाहरी हिस्सों में अच्छी तरह से विसंक्रमण करना चाहिए।
- अण्डो के उष्मायन के दौरान उचित तापक्रम (25 डिग्री सेन्टी ग्रेड) तथा आद्रर्ता (75%) रखनी चाहिए ।
- कीटपालन के दौरान स्वच्छता पर पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।
- बीमारी वाले कीड़े को तुरन्त बिना बीमारी वाले कीड़े के बीच से तुरन्त हटा देना चाहिए तथा कीट पालन कक्ष से दूर ले जाकर जला देना चाहिए या जमीन में गाड़ देना चाहिए।
- कीड़ो को उच्च गुणवत्ता वाली पत्तियों को खिलाना चाहिए एवं उनके बीच उचित अन्तराल एवं पर्याप्त वातायन रखना चाहिए।
- कीट पालन के दौरान उचित तापक्रम एवं आद्रता का ध्यान रखना चाहिए।
- लैवेक्स का नियमित उपयोग करना चाहिए

मस्कार्डिन

रेशम कीटपालन के दौरान निम्न तापक्रम एवं उच्च आद्रता के होने पर यह रोग फैलता है। यह बीमारी वर्षा तथा शरद काल के समय में होती है। यह बीमारी कीड़े में कवक के द्वारा होती है।

लक्षण

इस रोग से ग्रसित कीड़े की भूख समाप्त हो जाती है। तथा कीड़ा सुस्त होने लगता है। और धीरे–धीरे मरने लगता है। मरने के बाद कीड़ा कड़ा हो जाता है। कीड़ा का शरीर

सफेद हो जाता है। अंतिम अवस्था में काला धब्बा शरीर पर दिखाई देता ह

रोग का फैलाव

सूखे मरे हुए कीडे, बीमारी से ग्रसित कीडें, दूषित वातावरण दूषित कीटपालन कक्ष तथा दूषित कीटपालन की सामग्री से बीमारी फैलती है। रोग का फैलाव वायु के माध्यम से होता है।

रोग को रोकने तथा नियत्रंण का उपाय

- सक्रंमित कीडे को चुनकर नष्ट कर देना चाहिए।
- कीटपालन कक्ष हवादार होना चाहिए।
- प्रत्येक मोल्ट उसके बीच के समय चूना का छिडकाव करना चाहिए जिससे आद्रता का नियंत्रण किया जा सकें
- रेशम कीट को गुणवत्ता वाली पत्तिया देना चाहिए। कीटो के बीच मे उचित अंन्तराल रखना चाहिए।
- कीटपालन कक्ष, कीटपालन सामग्री एवं कक्ष के चारों ओर के परिवेश का उचित ढ़ग से संक्रमण करना चाहिए।
- रेशम कीट के सतह को उचित ढ़ग से विसंक्रमित करना चाहिए।
- कीट पालन के समय स्वच्छता एवं असंक्रमक स्थिति को सुनिश्चित करना चाहिए।

मस्कार्डिन से ग्रसित रेशम कीट

- लेवेक्स का नियमित उपयोग करना चाहिए।
- रोग का प्रकोप होने पर डाइथेन एम 45 का केओलिन में 2% मिश्रण कर कीडों पर छिडकाव करे।

एकीकृत रेशम कीट रोग प्रबन्धन

रेशम कीट के रोगो को रोकने के लिए व्यापक एकीकृत योजना बनाना चाहिए रोग की रोगथाम की अपेक्षा प्रतिबन्ध लगाना अधिक अच्छा हैं। निन्नलीखित बातों को ध्यान रखकर अगर कीट पालन किया जाय तो अधिक से अधिक कोसा का उन्पादन होगा और कीड़ो में बीमारी का कम प्रकोप होगा।

- केवल रोगमुक्त चकत्तो का ही कीट पालन करना चाहिए, तितली जाच द्वारा संक्रमित बीज चकत्तो को अलग कर निकाल देना चाहिए।
- शहतूत के पीड़को का उचित प्रबन्धन द्वारा नियंत्रित करना चाहिए।
- कीटपालन के दौरान कीट पालनगृह तथा उसके चारोतरफ सफाई का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।
- समय पर उपयुक्त तथा उचित मात्रा में पत्ती खिलाकर रेशम कीट में ओजस्व की बढ़ोत्तरी करना चाहिए जिससे रोग के प्रतिरोधकता मे वृद्वि हो सकें।
- कीडों को पत्ती खिलाने की संख्यों में कमी नही होनी चाहिए।
- कीट के मल तथा अन्य सामग्री को गहरे गड़डे में डाल देना चाहिए।
- कीट पालन कक्ष तथा ट्रे/डाला में उचित आद्रता बनाये रखना चाहिए।
- लेवेक्स को संस्तुति (शिफारिस) के अनुसार समय पर देते रहना चाहिए।
- रेशम कीट पालन के दौरान स्वस्थ/रोगमुक्त परिवेश बनाये रखना चाहिए।
- रोगग्रस्त रेशम कीटों को चुन–चुन कर निकालते रहना चाहिए।
- रेशम कीट पालन के पहले एंव बाद में हर बार रेशम कीट पालन गृह एंव उपकरणों को विसंक्रमित करना चाहिए।
- कीट पलान करने पर हर बार हाथ को साबुन से धोना चाहिए।
- रेशम उत्पादक कीट पालन प्रबन्धन को अपना कर अधिक से अधिक कोसा उत्पादन कर सकता है। तथा अपनी आर्थिक दशा में सुधार ला सकता है।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, भारत
CENTRAL SILK BOARD, INDIA

रेशम कीट के प्रमुख रोग एवं उनका प्रबन्धन

सम्पादन

डा० घनश्याम सिंह, वैज्ञानिक - डी

अनुसंधान प्रसार केन्द्र, भण्डरा, लोहरदगा (झारखण्ड)